ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-4* Issue-12* March- 2020
Anthology : The Research

भारतीय शिक्षा का वर्तमान स्वरूप

सारांश

भारत में शिक्षा की वर्तमान स्थिति अत्यन्त ही निराशाजनक है। इस शिक्षा पद्धति में कही एकरूपता नही दिखाई देती इस समय समाज में शिक्षा दो वर्गो में बटी हुई है। अंग्रेजी माध्यम से पब्लिक स्कूल में पढने वाले बच्चे आगे बढ़ रहे है। जबकि दूसरी तरफ ग्रामीण और प्रतिभावान बच्चे अपनी क्षमता के अनुसार अनुकूलन पद हासिल नही कर पर रहे है। शिक्षाविदों के अनुसार सभी को समान शिक्षा दी जानी चाहिए किन्तु, ऐसा होना सम्भव नही है।

सविता राजन
असि0 प्रोफेसर समाजशास्त्र
इ0गा0 राज0 स्नात0 महा0
बांगरमऊ उन्नाव, भारत

प्रस्तावना

भारत में एक तरफ कान्वेन्ट स्कूल है जिनकी शिक्षा बहुत ही महगी है यहाँ प्रवेश के लिए अभिभावको को बहुत ही अथक प्रसास करने पडते है। प्रवेश के लिए अच्छी खासी रकम देनी पड़ती है अभिभावको को किताबो से लेकर यूनीफार्म लेने के लिए एक दुकान से बाध्य किया जाता है। जो उस शिक्षण संस्थान से अनुबन्धित होती है इन स्कूलों में पढने वाले बच्चो का पारिवारिक माहौल लिखने पढ़ने के अनुकूल रहता हैं घर में अखबार मैगजीन तथा अन्य पाठ्य सामाग्री उपलब्ध रहती है और यही बच्चे हर जगह भारत का प्रतिनिधित्व करते है। इस लिए सरकार भी इन पर रोक नही लगा सकती किन्तु वास्तविक शिक्षा का क्या सही स्वरूप है इन स्कूलो में प्रदान की जाने वाली शिक्षा का उद्देश्य जीवन से कम जीविका से ज्यादा होता हैं।

क्या शिक्षा का उद्देश्य केवल जीविका से ही सम्बन्धित है? यह एक विचारणीय प्रश्न हैं। दूसरी तरफ ग्रामीण शिक्षा की बुनियाद ही खोखली हैं हम अभी तक बुनियादी शिक्षा को सुधार नही पाएं है।

यदि हम समान शिक्षा की बात करे तो इससे गरीब का भाग्य सुधरेगा क्योंकि उसे अच्छी शिक्षा मिलेगी अमीर का भाग्य टूटेगा क्योंकि उसे अच्छी प्राइवेट शिक्षा नही मिल पायेगी। किन्तु ऐसा होना सम्भव नहीं है।

समाज में आर्थिक असमानता कभी मिट नहीं पायेगी और इसी आर्थिक असमानता के कारण शिक्षा में असमानता सदैव बनी रहेगी सरकारी विद्यालयो में कोई भी मध्यमवर्गीय व्यक्ति अपने बच्चों को नही पढ़ाना चाहता वे पैसा जोड़ – जोड़ कर अपने बच्चो को प्राइवेट स्कूलो में पढ़ाना चाहते है जिससे बच्चे वर्तमान शिक्षा के अनुरूप अपने आप को बना सके।

प्रारम्भिक शिक्षा की असन्तोषजनक स्थिति के कारण इसका प्रत्यक्ष प्रभाव उच्च शिक्षा पर भी पड़ रहा है। शिक्षा में गुणवत्ता का स्तर सभी स्तरों पर गिरता जा रहा है। एक तरफ सरकार आठवी तक किसी को फेल न करने कि किवायद कर रही है। इससे बालक की नीवं ही कमजोर होती है। यही बच्चे पास होकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने स्नातक स्तर पर आसानी से पहुँच जाते है। और शिक्षा सिर्फ डिग्री प्राप्त करने का माध्यम बन गयी है। और ऐसी डिग्रीयां छात्रों को जीविका भी नही दे पा रही भारत में ज्यादा तर कालेज डिग्रीया बाट कर बेरोजगारी को बढावा दे रही हैं।

जगह–जगह प्राईवेट स्कूल, कालेज आदि कुकरमुत्ते की तरह फैल रही है और इन्हे मान्यता भी आसानी से मिल जाती है। बढ़ती जनसंख्या के कारण छात्रों की संख्या में बढोत्तरी हो रही है। इनका मुख्य उद्देश्य किसी भी प्रकार से कालेज में प्रवेश लेना होता है। ये अपनी जेब के अनुसार किसी भी कालेज में प्रवेश ले लेते है। इनको डिग्री तो मिल

जाती है किन्तु ये किसी भी प्रतियोगी परीक्षाओ में श्रेष्ठ प्रर्दशन नही कर पाते।

शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए शिक्षा के व्यवसायीकरण और बाजारीकरण को रोकना होगा तथा मूल्य आधारित शिक्षा कि व्यवस्था करानी होगी जो व्यक्तित्व का विकास कर छात्र को आत्म निर्भर बना सके। शिक्षा का स्वरूप और शैक्षणिक व्यवस्था इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षण संस्थान कैसे है। किसी भी देश की नीव प्रारम्भिक शिक्षा ही होती है इस लिए प्रारम्भिक शिक्षा को भी बेहतर बनाना होगा। जब इस शिक्षा में सुधार आयेंगे तो माध्यमिक शिक्षा की नीवं मजबूत होगी और इस मजबूत शिक्षा की नीवं पर उच्च शिक्षा कि इमारत को खड़ा कर पायेंगे।

यदि हम भारत का इतिहास देखे तो फाहयान भारत आया था इसने अपनी यात्रा के वृतान्तो में भारतीय शिक्षा कि प्रशंसा की है। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी यहाँ के शिक्षा तंत्र का सराहा है। तक्षशिक्षा नालन्दा विश्वविद्यालय उच्च कोटि के विश्व विद्यालय थे जिनकी ख्याति सम्पूर्ण विश्व में थी। इन विश्व विद्यालययों ने हमे उच्चकोटि के विद्वान दिए, जनका नाम इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज है।

किन्तु वर्तमान समय में हम पिछड़ गये है। यदि हम अभी भी नही सम्भले तो हम और पिछड़ते चले जायेंगे 2012–13 कि टाइम्स हायर ऐजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैकिंग रिर्पोट के अनुसार विश्व के टॉप 200 विश्व विद्यायलयों में भारत का एक भी शिक्षण सस्थान नही है। यह हमारे लिए शर्मनाक बात है इतिहास को उठा कर देखे तो प्राचीन काल में धर्म, साहित्य, वेद, पुराण, आयुर्वेद , चिकित्सा, ज्योतिष, गणित आदि कि शिक्षा प्राप्त करने अन्य देशो से विद्यार्थी भारत आते है और अब इसके विपरीत आज के विद्यार्थी भारत छोड़ कर विदेशों में शिक्षा ग्रहण करने चले जाते है इस स्थिति से बचने कि लिए तथा भारत को पुनः शिक्षा का स्वर्ण केन्द्र बनाने के लिए सभी को मिल कर प्रयास करना होगा । और इसकी शुरूआत प्रारम्भिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक होनी चाहिए शिक्षा में सुधार हो रहे है। और ये सुधार सार्धक और व्यावहारिकता को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिए। अब हम उम्मीद कर सकते है कि हमारी शिक्षा जल्द ही अन्तर्राष्ट्रीय मानको के समक्ष पहुँच जायेगी।

सन्दर्भ ग्रंथ :

1. माथुर, ए0 एस0 (2004–05):'शिक्षक तथा माध्यमिक शिक्षा' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
2. पाठ्क, पी0डी0 (1974):' भारतीय शिक्षा एवं उसकी समस्याएं'' विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
3. दैनिक जागरण (2012) 10 जनवरी
4. परीक्षा मन्थन निबन्ध संग्रह भाग–4 (2010–11) पृष्ठ 120 – 123
5. गुप्ता विशेष, सम्पादकीयः हिन्दुस्तान